

सवाल पुं. (अर.) 1. प्रश्न 2. मांग जैसे- दस रुपए का सवाल है बाबा।

सवाल-जवाब पुं. (अर.) 1. प्रश्न और उसका उत्तर 2. पूछताछ, जाँच के समय पूछे जाने वाले प्रश्न और उत्तर 3. तर्क-वितर्क, शास्त्रार्थ, वाद-विवाद 4. झगड़ा, तकरार।

सवालिया वि. (अर.) 1. प्रश्नात्मक, प्रश्न के रूप में प्रस्तुत (कथन) 2. जिसका उत्तर देना हो, प्रश्नसूचक।

सवाली वि. (अर.) 1. माँगने वाला, याचक, भिखारी 2. दे. 'सवालिया'।

सवासन वि. (तत्.) 1. वस्त्र के साथ 2. घर के साथ 3. पात्र के साथ (तद्.) दे. शवासन।

सविकल्प वि. (तत्.) विकल्प के साथ, ऐच्छिक समाधि का प्राथमिक रूप जिसमें ज्ञेय और ज्ञाता दोनों की भिन्नता का बोध रहता है वि. भिन्नत्व का बोध समाप्त हो जाने पर समाधि निर्विकल्प कही जाती है।

स-विचार क्रि.वि. (तत्.) विचारपूर्वक, सोच समझकर वि. विचार युक्त।

स-वितर्क वि. (तत्.) विवेकयुक्त, विचारवान् क्रि.वि. तर्कपूर्वक।

सविता पुं. (तत्.) 1. एक वैदिक देवता 2. सूर्य 3. शिव 4. बारह की संख्या 5. उत्पादक, जन्मदाता, सृष्टिकर्ता।

सविता-तनय पुं. (तत्.) शनि, यम और कर्ण।

सविता दैवत पुं. (तत्.) 27 नक्षत्रों में से एक हस्त नक्षत्र।

सवित्र पुं. (तत्.) उत्पत्ति का साधन या कारण।

सवित्रिय वि. (तत्.) सूर्य से संबंधित, सौर।

सवित्री स्त्री. (तत्.) 1. माता 2. धाय 3. गाय।

सविद्य वि. (तत्.) 1. विद्वान् 2. समान विद्या के (अन्य) विद्वान्।

सविधि वि. (तत्.) विधिपूर्वक क्रि.वि. विधि के अनुसार।

सविनय क्रि.वि. (तत्.) विनय के साथ, विनयपूर्वक।

सविनय अवज्ञा स्त्री. (तत्.) विनय पूर्वक आज्ञा का उल्लंघन, सरकार की अनुचित नीतियों का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी द्वारा प्रचलित अहिंसात्मक आंदोलन।

सविनोद क्रि.वि. (तत्.) हँसी-मजाक के साथ, हँसी में।

सविभास पुं. (तत्.) सात सूर्यों में से एक।

सविभ्रम वि. (तत्.) प्रणयक्रीड़ा या विलास से युक्त।

सविभ्रमा वि.स्त्री. (तत्.) ऐसी (नायिका) जो प्रणय प्रदर्शन हेतु विलास चेष्टा करती हो।

सविशेष वि. (तत्.) विशेष गुणों से युक्त।

सविस्तार क्रि.वि. (तत्.) विस्तारपूर्वक, विस्तार के साथ।

सवेग क्रि.वि. (तत्.) वेग से, तेजी से, गतिपूर्वक।

सवेतन वि. (तत्.) जिसका वेतन दिया जाय, वेतन के साथ जैसे- सवेतन अवकाश।

सवेरा पुं. (तद्.) प्रातःकाल।

सवेरे क्रि.वि. (तद्.) प्रातःकाल के समय।

सवेश वि. (तत्.) 1. अच्छा वेश पहना हुआ, सुसज्जित 2. निकट का, पास का।

सवैया पुं. (तद्.) 1. सवाया, उन्नीसवीं शताब्दी तक प्रचलित तोल का एक बाट जो सवा सेर का होता था 2. कुछ दशक पूर्व तक प्रचलित 1 का पहाड़ा (सवा एकम सवा, सवा दूना ढाई आदि) 3. 22 से 26 वर्णों वाला मात्रिक छंद जिसे लय से गाया जा सकता है, इसके अनेक भेद हैं।

सव्य वि. (तत्.) 1. बायाँ 2. प्रतिकूल पुं. 1. विष्णु 2. यज्ञोपवीत।